17

अष्टाध्यायी का तृतीय अध्याय

पूर्व पाठ में आपने कुछ वैदिक शब्दों का प्रयोग तथा प्रक्रिया को जाना। इस पाठ में इन्, ण्वि, ज्युट्, विट्, विच्, क्विप् इत्यादि प्रत्ययों का प्रयोग करेंगे। और कुछ निपातन से सिद्ध शब्दों की भी आलोचना करेंगे। दश लकार होते हैं। उनमें से लेट्-लकार का प्रयोग वेद में होता है यह आप जानते ही हैं। इस पाठ के अन्त में लेट्लकार सम्बन्धी चर्चा करेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- धातु से परे इन्, ण्वि, ज्युट्, विट्, विच्, क्विप् इत्यादि प्रत्यय कब होते हैं इस विषय को जान पाने में;
- कुछ निपातन से सिद्ध शब्दों को जान पाने में;
- लेट्-लकार की विशेषता जान पाने में;
- छन्द में लेट्-लकार के रूप की प्रक्रिया को जान पाने में।

17.1 छन्दसि निष्टर्क्यदेवहूय- प्रणीयोन्नीयोच्छिष्य- मर्यस्तर्याध्वर्य-खन्यखान्य- देवयज्यापृच्छ्यप्रतिषीव्य- ब्रह्मवाद्यभाव्य-स्ताव्योपचाय्य-पृडानि॥ (3.1.123)

सूत्रार्थ- निष्टर्क्य आदि शब्दों का छन्द विषय में निपातन किया जाता है।

सूत्रावतरणिका- छन्द विषय में निष्टर्क्य-देवहूय-प्रणीय-उन्नीय-उच्छिष्य-मर्य-स्तर्या-ध्वर्य-खन्य-खान्य-देवयज्या-अपृच्छ्य- प्रतिषीव्य-ब्रह्मवाद्य-भाव्य-स्ताव्य-उपचाय्य-पृड शब्दों के निपातन के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से उक्त पदों का निपातन किया गया है। इस सूत्र में दो पद हैं। वहाँ छन्दसि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। निष्टर्क्यदेवहूयप्रणीयोन्नीयोच्छिष्य मर्यस्तर्याध्वर्यखन्यखान्यदेवयज्यापृच्छ्यप्रतिषीव्यब्रह्मवाद्य- भाव्यस्ताव्योपचाय्यपृडानि यह प्रथमाबहुवचनान्त पद है। निपात्यन्ते अर्थात् अध्याहार किया जाता है। निपातन क्या होता है इस प्रश्न का उत्तर सिद्ध प्रक्रिया का निर्देश निपातन है। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में निष्टर्क्य-देवहूय-प्रणीय-उन्नीय-उच्छिष्य-मर्य-स्तर्या-ध्वर्य-खन्य- खान्य-देवयज्या-अपृच्छ्य- प्रतिषीव्य-ब्रह्मवाद्य-भाव्य-स्ताव्य-उपचाय्य-पृड-इन शब्दों का निपातन किया जाता है।

उदाहरण–

इनके उदाहरण जैसे ''निष्टर्क्यं चिन्वीत पशुकामः''। ''स्पर्धन्ते वा उ देवहूये''। ''आपृच्छ्यं धरुणं वाज्यर्षति''। इत्यादि।

वहाँ निष्टर्क्य में निस्-पूर्वक-कृत्-धातु से क्यप्प्रत्यय प्राप्त होने पर निपातन से ण्यत्प्रत्यय करके ऋकार को गुण रपरत्व पूर्वक निस् कर् त् य इस अवस्था में आद्यन्त दो वर्णों के विपर्यय से अर्थात् ककार और तकार को विपर्यय होने पर निस् तर् क् य इस स्थिति में सकार को षत्व और तकार को टकार होकर निष्टर्क् रूप बनता है। लोक में निष्कृत्य रूप होता है।

देवहूयः:- देवानां ह्वानं हवनं वा यह विग्रह करके देवशब्द पूर्वक ह्वेधातु से अथवा हू धातु से क्यप्प्रत्यय होने पर तथा दीर्घ होकर निपातन से तुक् के अभाव में देवहूयः यह रूप सिद्ध होता है।

प्रणीयः:- प्रपूर्वक णी धातु से क्यप्प्रत्यय करने पर प्रणीय रूप बनता है। लोक में तो यत्प्रत्यय से प्रणेय रूप सिद्ध होता है।

उन्नीयः:- उत्पूर्वक नी धातु से क्यप्प्रत्यय करने पर यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो उन्नेयः रूप होता है।

उच्छिष्यम्- उत्पूर्वक शिष्-धातु से क्यप्प्रत्यय करने पर उच्छिष्यम् यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो उच्छेष्यम् रूप बनता है।

मर्यः:- मृधातु से यत्प्रत्यय करने पर यह रूप बनता है। लोक में तो ण्यत्प्रत्यय करके मार्यः रूप बनाया जाता है।

स्तर्या- स्तृधातु से यत्प्रत्यय करके स्त्रिलिंग में टाप् करने पर स्तर्या रूप सिद्ध होता है। यह रूप स्त्रीलिङ्गान्तता से निपातित है। लोक में तो स्तृधातु से ण्यत्प्रत्यय करने पर स्तार्यः रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणी

ध्वर्यः- ध्वृ धातु से यत्प्रत्यय करने पर ध्वार्य रूप बनता है। लोक में तो ण्यत्प्रत्यय से ध्वार्यः रूप बनता है।

खन्यः, खान्यः- खन्धातु से यत्प्रत्यय करने पर खन्यः रूप सिद्ध होता है। खन्धातु से ण्यत्प्रत्यय करने पर खान्यः रूप सिद्ध होता है। लोक में तो दोनों जगह यत्प्रत्यय से खेयः रूप बनता है।

देवयज्या- देवानां यजनम् व्युत्पत्ति पूर्वक देव उपपदक-यज्धातु से यत् प्रत्यय करके स्त्रिलिंग में टाप् प्रत्यय करने पर यह रूप सिद्ध होता है। लोक में इज्या यह रूप होता है।

अपृच्छ्यः- आङ्पूर्वक-प्रच्छ्-धातु से क्यप्प्रत्यय करने पर यह रूप बनता है। लोक में तो ण्यत् प्रत्यय से आप्प्राच्छ्यः रूप सिद्ध होता है।

प्रतिषीव्यः- प्रति पूर्वक सिव्-धातु से क्यप्प्रत्यय तथा सकार को षत्व तथा इकार को हलि च से दीर्घ होकर प्रतिषीव्य रूप बनता है। लोक में तो प्रतिषेव्यः रूप बनता है।

ब्रह्मवाद्यम्- ब्रह्मणः वेदस्य वदनम् विग्रह पूर्वक ब्रह्मन् उपपदक-वद्-धातु से ण्यत् प्रत्यय करने पर यह रूप सिद्ध होता है। लोक में क्यप्प्रत्यय तथा यत्प्रत्यय से ब्रह्मोद्यम्, और ब्रह्मवद्यं दो रूप बनते हैं।

भाव्यः, स्ताव्यः- भूधातु तथा स्तुधातु से ण्यत् प्रत्यय करने पर यथाक्रम भाव्यः स्ताव्यः ये दो रूप सिद्ध होते हैं। लोक में तो भूधातु से यत्प्रत्यय करने पर भव्यः, तथा स्तुधातु से क्यप्प्रत्यय करने पर स्तुत्यः ये दो रूप बनते हैं।

उपचाय्यपृडम्- पृडयति सुखयति विग्रह पूर्वक पृड्-धातु से क्यप्प्रत्यय करने पर पृडः रूप सिद्ध होता है। उपचाय्यं च तत् पृडम् च विग्रह पूर्वक कर्मधारयसमास में उपचाय्यपृडम् रूप बनता है। यहाँ पृड उत्तरपद के परे रहते उपपूर्वक चि धातु से ण्यत्प्रत्यय करके अयादेश का निपातन किया गया है।

17.2 छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्॥ (3.2.27)

सूत्रार्थ– वेद विषय में वन आदि धातुओं से कर्म उपपद रहते इन् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- छन्द विषय में वन्-सन्-रक्ष्-और मथ्-धातु से कर्म उपपद रहते इन्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यग सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से इन्-प्रत्यय का विधान किया गया है। इस सूत्र में दो पद हैं। छन्दसि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। वनसनरक्षिमथाम् यह षष्ठीबहुवचनान्त पद है। यहाँ पञ्चचम्यर्थ में षष्ठी बोद्धव्य है। स्तम्बशकृतोरिन् सूत्र से इन् की अनुवृत्ति आती है। कर्मणि भृतौ सूत्र से कर्मणि की अनुवृत्ति आ रही है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आ रहा है। धातोः से धातुभ्यः ऐसा पञ्चमीबहुवचनान्त

का ग्रहण करना चाहिए। तब छन्द विषय में वन सन रक्ष मथ् आदि धातुओं से कर्म उपपद रहते इन् प्रत्यय परे होता है ऐसी वाक्य योजना बनती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में वन्-सन्-रक्ष्-और मथ्-धातुओं से कर्म उपपद रहते इन्-प्रत्यय धातु से परे हो। यहाँ वन्-धातु का माँगना अर्थ है। सन्-धातु दानार्थक है। रक्ष्-धातु पालनार्थवाची है। मथ्-धातु विलोडनार्थक है।

उदाहरण- ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिम् ऐसा वेद में प्रयोग है। वहाँ ब्रह्म वनति व्युत्पत्ति पूर्वक कर्म उपपद रहते प्रकृतसूत्र से याचनार्थक वन्-धातु से इन्-प्रत्यय की प्रक्रिया में ब्रह्मन् वन् इन् इस स्थिति में अनुबन्धलोप होने पर ब्रह्मन् वन् इ होकर नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य से प्रातिपदिकान्त ब्रह्मन् के नकार का लोप होने पर ब्रह्म वन् इ इस स्थिति में सम्पूर्ण ब्रह्मवनि होने पर उपपदसमास में प्रातिपदिक संज्ञा करके द्वितीया एकवचन की विवक्षा में अम् हुआ ब्रह्मवनि अम् होकर अमि पूर्वः से पूर्वरूप एकादेश में ब्रह्मवनिम् रूप बनता है। क्षत्रवनिम् भी इसी प्रकार बनता है। गोषणिं पथिरक्षी हविर्मथिः इत्यादि उदाहरण और भी हैं।

17.3 छन्दसि सहः॥ (3.2.63)

सूत्रार्थ– वेद विषय में सुबन्त उपपद रहते सह धातु से ण्वि प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- सुबन्त उपपद रहते सह्-धातु से ण्वि-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से ण्विप्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। छन्दसि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। सहः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। भजो ण्विः इस सूत्र से ण्विः की अनुवृत्ति आ रही है। सुपि की अनुवृत्ति होती है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आ रहा है। छन्द विषय में सह धातु से ण्वि प्रत्यय होता है सुप् परे रहते यह वाक्य योजना बनती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में सह्-धातु से सुबन्त उपपद रहते ण्वि-प्रत्यय धातु से परे होता है। और सह्-धातु का अर्थ मर्षण होता है।

उदाहरण-पृतनाषाट् उदाहरण है। पृतनां सहते यह व्युत्पत्ति करके सुबन्त उपपद रहते सह्-धातु से प्रकृत सूत्र से ण्वि-प्रत्यय होकर पृतना सह् ण्वि इस स्थिति में अनुबन्धलोप होकर पृतना सह् इस स्थिति में अत उपधायाः से उपधा को वृद्धी होकर पृतना साह् इस स्थिति में उपपदसमास होकर प्रातिपदिकसंज्ञा में सौ से अनुबन्धलोप पृतनासाह् स् इस स्थिति में हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् से सकार का लोप हो ढः से हकार को ढकार पृतनासाढ् इस स्थिति में झलां जशोऽन्ते से ढकार को डकार होकर अवसान संज्ञा में वावसाने से डकार को टकार होकर पृतनाषाट् रूप बनता है।

टिप्पणी

17.4 वहश्चः॥ (3.2.64)

सूत्रार्थ- छन्द विषय में सुप् उपपद रहते वह् धातु से ण्वि प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- सुबन्त उपपद रहते वह् धातु से ण्वि-प्रत्यय के विधान के लिए सूत्र को प्रणीत किया गया।

सूत्रव्यख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से सुबन्त उपपद रहते वह धातु से ण्वि-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। और वह च यह सूत्रगत पदच्छेद है। वहः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। च यह अव्ययपद है। भजो ण्विः इस सूत्र से ण्वि की अनुवृत्ति आ रही है। छन्दसि सहः सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति आ रही है। सुपि इसकी अनुवृत्ति आ रही है। धातोः और प्रत्यय का अधिकार आ रहा है। छन्द विषय में वह् धातु से ण्वि प्रत्यय होता है सुप् परे रहते यह वाक्ययोजना है। और सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में सुबन्त उपपद रहते वह्-धातु से ण्वि-प्रत्यय होता है।

उदाहरण- दित्यवाट्।

सूत्रार्थ का समन्वय- दित्यं वर्षद्वयं वहति विग्रह पूर्वक सुबन्त उपपद रहते वह्-धातु से प्रकृतसूत्र से ण्वि-प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप होकर दित्य वह् इस स्थिति में अत उपधायाः से उपधा को वृद्धी होकर दित्य वाह् होने पर उपपदसमास होकर प्रातिपदिकसंज्ञा में सौ से अनुबन्धलोप होकर दित्यवाह् स् होकर हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् से सकार का लोप होकर हो ढः से हकार को ढकार होकर दित्यवाढ् होने पर झलां जशोऽन्ते से ढकार को डकार वावसाने से डकार को टकार होकर दित्यवाट् रूप सिद्ध होता है।

17.5 हव्येऽनन्तःपादम्॥ (3.2.66)

सूत्रार्थ- हव्य सुबन्त उपपद रहते छन्द विषय में अनन्तःपाद में वह को ण्युट् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- हव्य उपपद तथा सुबन्त उपपद रहते छन्द विषय में अनन्तःपाद में वह को ण्युट्-प्रत्यय के विधान के लिए इस सूत्र को प्रणीत किया गया।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से ण्युट्-प्रत्यय का विधान किया जाता है। इस सूत्र में दो पद हैं। हव्ये अनन्तःपादम् यह सूत्रगत पदच्छेद है। हव्ये सप्तम्येकवचनान्त यह पद है। अनन्तःपादम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। अन्तः मध्ये पादस्येति अन्तःपादम् इति यहाँ अव्ययीभावसमास है। न अन्तःपादम् अनन्तःपादम् में नञ्तत्पुरुष समास है। वहश्च सूत्र से वहः की अनुवृत्ति आती है। छन्दसि सहः सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति आ रही है। काव्यपुरीषपुरीष्येषु ण्युट् सूत्र से ण्युट् की अनुवृत्ति आ रही है। सुपि की अनुवृत्ति

आ रही है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आ रहा है। भवति का अध्याहार है। और तब वाक्य योजना इस प्रकार होती है हव्य सुबन्त उपपद रहते छन्द विषय में पाद के मध्य में वह धातु से ञ्युट् प्रत्यय होता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है हव्य उपपद रहते तथा सुबन्त उपपद रहते छन्द विषय में पाद के मध्य में वह्-धातु को ञ्युट्-प्रत्यय होता है। अर्थात् हव्य उपपद तथा सुबन्त उपपद रहते छन्द विषय में वह्-धातु से ञ्युट्-प्रत्यय होता है दो पाद के मध्य में तो नहीं होता है। अपितु पाद के मध्य में वहश्च से ण्वि प्रत्यय ही होता है।

उदाहरण- अग्निश्च हव्यवाहनः यह वैदिकप्रयोग है।

सूत्रार्थ का समन्वय– वहाँ हव्यवाहनः यहाँ पर हव्यं वहति ऐसा विग्रह करने पर हव्य के उपपद रहते वह्-धातु को प्रकृतसूत्र से ञ्युट्-प्रत्यय तथा अनुबन्धलोप होकर हव्य वह् यु इस स्थिति में अत उपधायाः से उपधा को वृद्धि हव्य वाह् यु होकर युवोरनाकौ से यु को अनादेश होकर संयोग करके सम्पूर्ण हव्यवाहन की उपपदसमास प्रातिपदिकसंज्ञा में विभक्ति करके हव्यवाहनः रूप सिद्ध होता है।

17.6 जनसनखनक्रमगमो विट्॥ (3.2.67)

सूत्रार्थ- उपसर्ग में सुबन्त उपपद रहते जन आदि धातुओं से वेद विषय में विट् प्रत्यय होता है। (शेखरः)

सूत्रावतरणिका- उपसर्ग उपपद और सुबन्त उपपद रहते जन्-धातु सन्-खन्-क्रम्- और गम्-धातु से विट्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से विट्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। जनसनखनक्रमगमः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। विट् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि सहः सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति आ रही है। उपसर्गे और सुपि की भी अनुवृत्ति आती है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आ रहा है। उपसर्ग तथा सुबन्त उपपद रहते जनसनखनक्रमगमः धातुओं से विट् प्रत्यय परे होता है ऐसी वाक्य योजना बनती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है उपसर्ग उपपद रहते तथा सुबन्त उपपद रहते जन्-धातु सन्-खन्-क्रम्- और गम्-धातुओं से विट्-प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण- अब्जः।

सूत्रार्थ का समन्वय- अप्सु जायते इस विग्रह में अप्सु में सुबन्त उपपद रहते प्रकृतसूत्र से विट्-प्रत्यय होकर अप् जन् विट् इस स्थिति में विट का सर्वोपहारलोप होकर अप् जन् इस स्थिति में विट्-वनोरनुनासिकस्यात् सूत्र से नकार को आकारादेश होकर अप् ज आ इस स्थिति में सवर्णदीर्घ होकर अप् जा इस स्थिति में झलां जशोऽन्ते से पकार को बकार आदेश होकर संयोग में निष्पन्न अब्जा को उपपदसमास में प्रातिपदिकसंज्ञा होकर विभक्ति कार्य होकर अब्जाः रूप बनता है। गोजाः गोषाः इत्यादि उदाहरण हैं।

टिप्पणी

17.7 मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन्॥ (3.2.71)

सूत्रार्थ- मन्त्र विषय में श्वेतवह उक्थशस् और पुरोडाश से ण्विन् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका– मन्त्र विषय में श्वेतवह् उक्थशस् और पुरोडाश् सूत्रपठित शब्दों से ण्विन्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से ण्विन्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। मन्त्रे यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। ण्विन् यह प्रथमान्त पद है। प्रत्ययः और परः का अधिकार आता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है मन्त्र विषय में श्वेतवह उक्थशस् तथा पुरोडाश शब्दों से ण्विन् प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण- श्वेतवाहौ।

सूत्रार्थ का समन्वय- प्रकृतसूत्र से श्वेतवह्-शब्द से ण्वि-प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप होकर श्वेतवह् इस स्थिति में अतरू उपधायाः से उपधा को वृद्धि श्वेतवाह् होकर उपपदसमास में प्रातिपदिकसंज्ञा होकर औ-प्रत्यय होकर सभी वर्णों का सम्मेलन करने से श्वेतवाहौ रूप सिद्ध होता है। एवं श्वेतवाहः इत्यादि उदाहरण भी स्वयम् बोद्धव्य हैं।

पाठगत प्रश्न-17.1

51. निपात किसको कहते हैं?
52. वन्-धातु का क्या अर्थ है?
53. पृतनां सहते इस अर्थ में कौन सा रूप सिद्ध होता है?
54. दित्यवाद् इस स्थिति में ढकार को डकार किस सूत्र से होता है?
55. छन्दसि वनसनरक्षिमथाम् इस सूत्र का क्या अर्थ है?
56. ज्युट्-प्रत्यय किस सूत्र से होता है?
57. ण्वि प्रत्यय विधायक एक सूत्र लिखो?
58. वहश्च का क्या अर्थ है?

17.8 अवे यजः॥ (3.2.72)

सूत्रार्थ- अव उपपद रहते यज्-धातु से मन्त्र के विषय में ण्विन् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- मन्त्र विषय में अव उपपद रहते यज्-धातु से ण्विन्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से अव उपपद रहते यज-धातु से ण्विन् प्रत्यय का विधान किया गया है। इस सूत्र में दो पद हैं। अवे यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। यजः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन् इस सूत्र से मन्त्रे और ण्विन् ये दो पद अनुवर्तित हैं। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आता है। तब मन्त्र विषय में अव उपपद रहते यज धातु से ण्विन् प्रत्यय परे होता है यह वाक्ययोजना बनती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है मन्त्र विषय में अव उपपद रहते यज्-धातु से ण्विन्-प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण- अवयाजौ।

सूत्रार्थ का समन्वय- अव उपपद रहते यज्-धातु से प्रकृतसूत्र से ण्विन्प्रत्यय होकर ण्विन्-प्रत्यय का सर्वापहारलोप होकर अव यज् इस स्थिति में यज्-धातु के अकार की अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा से उपधासंज्ञा तथा अत उपधायाः से उपधा के अकार को वृद्धी स्थान आन्तर्य से आकार होकर अव याज् इस स्थिति में संयोग में उपपदसमास में कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा और उसके बाद ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, और परश्च का अधिकार के प्रवर्तमान से स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खल कपोतन्याय से इक्कीस स्वादि प्रत्ययों में प्राप्त प्रथमाद्विवचन की विवक्षा में औ-प्रत्यय होकर सभी वर्णों के सम्मेलन से अवयाजौ रूप बनता है।

17.9 अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च॥ (8.2.67)

सूत्रार्थ–ये सम्बुद्धी में कृतदीर्घ निपात करता है।

सूत्रवतरणिका– संबुद्धी के परे रहते अवया श्वेतवा पुरोडा इन कृतदीर्घ शब्दों के निपात के लिए इस सूत्र को प्रणीत किया गया है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। अवयाः श्वेतवाः पुरोडाः च यह सूत्रगत पदच्छेद है। अवयाः श्वेतवाः और पुरोडाः ये तीनों पद प्रथमा एकवचनान्त हैं। च यह अव्ययपद है। संबुद्धौ यह पद प्राप्त होता है। चकार से उक्थशाः का भी ग्रहण होता है। तब अवयाः श्वेतवाः पुरोडाः और उक्थशाः संबुद्धी में यह वाक्य योजना बनती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है सम्बुद्धी में कृतदीर्घ अवयाः श्वेतवाः पुरोडाः और उक्थशाः इन शब्दों का निपात होता है।

उदाहरण– अवपूर्वक यज्, श्वेतपूर्वकवह्-, तथा पुरस्पूर्वकदास्-धातु से ''मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन्'' तथा ''अवे यजः'' इस सूत्र से ण्विन्प्रत्यय प्राप्त होने पर ''श्वेतवहादीनां डस् पदस्येति वक्तव्यम्'' इस वार्तिक से डस्प्रत्यय में ये रूप होते हैं। यहाँ सम्बोधन एकवचन में दीर्घ का निपात किया गया है।

टिप्पणी

17.10 विजुपे छन्दसि॥ (3.2.73)

सूत्रार्थ- उप उपपद रहते वेद विषय में यज धातु से विच् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- उप उपपद रहते यज्-धातु से विच्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से यज्-धातु से विच्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। विच् उपे छन्दसि यह सूत्रगत पदच्छेद है। विच् यह प्रथमान्त पद है। उपे यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। छन्दसि यह भी सप्तम्यन्त पद है। अवे यजः इस सूत्र से यज की अनुवृत्ति आ रही है। धातोः प्रत्ययः और परः का तो अधिकार आ ही रहा है। सूत्रार्थ इस प्रकार है उप उपपद रहते यज्-धातु से विच्-प्रत्यय होता है।

उदाहरण- उपयट्।

सूत्रार्थ का समन्वय- उपपूर्वक-यज्-धातु से विच्-प्रत्यय करके उप यज् विच् इस स्थिति में विच् का सर्वापहारलोप होकर उप यज् इस स्थिति में संयोग उपपद रहते समास में निष्पन्न उपयज् ऐसा होकर उपपदसमास में प्रातिपदिकसंज्ञा कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से उसकी प्रातिपदिकसंज्ञा होकर ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इत्यादि अधिकार सूत्र लगकर स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय पूर्वक इक्कीस स्वादि प्रत्ययों में प्राप्त प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सौ अनुनासिकत्व से पाणिनी के द्वारा प्रतिज्ञात सु प्रत्यय के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होकर तस्य लोपः इस सूत्र से उस इत्संज्ञक उकार का लोप होने पर उपयज् स् ऐसा होकर हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् से सकार का लोप होकर व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः से जकार को षकार उपयष् ऐसा होने पर झलां जशोऽन्ते से षकार को जश्त्व स्थानकृत आन्तर्य से डकार डकार के बाद वर्णाभाव में विरामोऽवसानम् इस सूत्र से अवसानसंज्ञा होकर अवसानपरक वावसाने से डकार को टकार होकर उपयट् यह रूप बनता है।

17.11 आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च॥ (3.2.274)

सूत्रार्थ– सुबन्त तथा उपसर्ग उपपद रहते आकारान्त धातुओं से छन्द विषय में मनिन आदि प्रत्यय होते हैं। तथा चकार से विच् भी होता है।

सूत्रावतरणिका- सुबन्त तथा उपसर्ग उपपद रहते छन्द विषय में आकारान्त धातुओं से मनिन्-क्वनिप्-वनिप्-विच् प्रत्ययों के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से मनिन्, क्वनिप्, वनिप्, विच् इन प्रत्ययों

टिप्पणी

का विधान किया गया है। इस सूत्र में तीन पद हैं। आतः मनिन्क्वनिब्वनिपः च यह सूत्रगत पदच्छेद है। आतः यह पञ्चम्यन्त पद है। मनिन्क्वनिब्वनिपः यह प्रथमाबहुवचनान्त पद है। च यह अव्ययपद है। विजुपे छन्दसि इस सूत्र से विच् और छन्दसि इन दो पदों की अनुवृत्ति आ रही है। सुपि उपसर्गे इनकी भी अनुवृत्ति आ रही है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आ रहा है। यहाँ आतः यह विशेषण है तथा, धातोः यह विशेष्य है। अतः तदन्तविधि में आदन्त धातु से यह अर्थ लाभ है। सूत्रार्थ इस प्रकार होता है सुबन्त तथा उपसर्ग उपपद रहते छन्द विषय में आदन्त धातुओं से मनिन्-क्वनिप्-वनिप्-तथा विच्-प्रत्यय परे होते हैं।

उदाहरण- सुदामा।

सूत्रार्थ का समन्वय- शोभनं ददाति ऐसा विग्रह करने पर शोभनम् यह सुबन्त उपपद रहते दा-धातु से आदन्तत्व होने से प्रकृतसूत्र से मनिन्-प्रत्यय होने पर अनुबन्धलोप होकर सु दा मन् इस स्थिति में उपपदसमास में प्रातिपदिक संज्ञा होकर सु का अनुबन्धलोप करके सुदामन् स् ऐसा होने पर सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ से उपधाको वृद्धि सकार का लोप और नकार का लोप होकर सुदामा यह रूप बनता है।

17.12 बहुलं छन्दसि॥ (3.2.88)

सूत्रार्थ– वेद विषय में कर्म उपपद रहते भूतकाल में हन् धातु को बहुल करके क्विप् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- उपपद रहते हुए भी हन्-धातु को बहुल करके क्विप्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से हन्-धातु से बहुल करके क्विप्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। बहुलम् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप् इस सूत्र से क्विप् की अनुवृत्ति आ रही है। कर्मणि हनः इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृत्ति आ रही है। भूते यह सूत्र भी यहाँ अनुवर्तित है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आता है। सूत्रार्थ इस प्रकार होता है कर्म उपपद रहते हन्-धातु से भूतकाल में क्विप्-प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण- मातृहा।

सूत्रार्थ का समन्वय- मातरं हतवान् विग्रह पूर्वक कर्म उपपद रहते भूतकाल में हन्-धातु से प्रकृतसूत्र से क्विप्-प्रत्यय होकर मातृ हन् क्विप् इस स्थिति में क्विप् का सर्वापहारलोप होकर उपपदसमास में प्रातिपदिकसंज्ञा होकर सु का अनुबन्धलोप होकर मातृहन् स् इस स्थिति में सौ च से उपधादीर्घ होकर सकार तथा नकार का लोप होकर मातृहा ऐसा रूप बनता है।

टिप्पणी

17.13 छन्दसि गत्यर्थेभ्यः॥ (3.3.126)

सूत्रार्थ– ईषद् आदि उपपद रहते गत्यर्थ धातुओं से छन्द विषय में युच् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका– छन्द विषय में ईषद् आदि उपपद रहते गत्यर्थक धातुओं से युच्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से गत्यर्थक धातुओं से युच्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। गत्यर्थेभ्यः यह पञ्चम्यन्त पद है। गतिः अर्थः येषां तेभ्यः गत्यर्थेभ्यः। आतो युच् इस सूत्र से युच् की अनुवृत्ति आती है। ईषद्-दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् इस सूत्र से ईषद्-दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु इन दो पदों की अनुवृत्ति आ रही है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में कृच्छ्राकृच्छ्रार्थों में ईषद्-दुःसुषु उपपद रहते गत्यर्थक धातुओं से युच्-प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण- सूपसदनः।

सूत्रार्थ का समन्वय- सु-उपपद पूर्वक तथा उप-उपपद पूर्वक सद्-धातु से गत्यर्थक प्रकृतसूत्र से युच्-प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप होकर सु उप सद् यु इस स्थिति में युवोरनाकौ से यु के स्थान पर अनादेश होकर सु उप सद् अन ऐसा होकर सवर्णदीर्घ संयोग में निष्पन्न सूपसदन के उपपद रहते समास प्रातिपदिकसंज्ञा होकर सु का अनुबन्धलोप होकर सूपसदनः रूप बनता है।

17.14 अन्येभ्योऽपि दृश्यते॥ (3.3.130)

सूत्रार्थ– गत्यर्थक धातुओं से अन्य धातुओं से भी छन्द विषय में युच् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- गत्यर्थक जो अन्य धातुएँ हैं उनसे भी छन्द विषय में युच्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से युच्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। अन्येभ्यः अपि दृश्यते यह सूत्रगत पदच्छेद है। अन्येभ्यः यह पञ्चम्यन्त पद है। अपि यह अव्ययपद है। दृश्यते यह क्रियापद है। आतो युच् इस सूत्र से युच् की अनुवृत्ति आती है। ईषद्-दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् इस सूत्र से ईषद्-दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु इन दो पदों की अनुवृत्ति आ रही है। छन्दसि गत्यर्थेभ्यः इस सूत्र से छन्दसि पद की अनुवृत्ति आ रही है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय मर कृच्छ्राकृच्छ्रार्थ में ईषद्-दुःसुषु उपपद रहते गत्यर्थक अन्य धातुओं से युच्-प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण - सुवेदनाम्।

सूत्रार्थ का समन्वय- सु-उपपदपूर्वक विद्-धातु से गत्यर्थभिन्नार्थकत्व से प्रकृतसूत्र से युच् होकर अनुबन्धलोप होकर सुविद् यु इस स्थिति में युवोरनाकौ से यु-को अनादेश सुविद् अन होने पर विद् के इकार को गुण एकार होकर सु वेद् अन इस स्थिति में संयोग में उपपदसमास प्रातिपदिकसंज्ञा में स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् को विभक्ति कार्य होकर सुवेदनाम् रूप बनता है।

17.15 लिङर्थे लेट्॥ (3.4.7)

सूत्रार्थ– विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि लिङ के अर्थ में धातु से वेद विषय में लेट् विकल्प से लेट् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- छन्द विषय में विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि लिङ के अर्थ में धातु से लेट्-विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से छन्द विषय में विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि लिङ के अर्थ में धातु से लेट् लकार होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। लिङर्थे यह सप्तम्यन्त पद है। लेट् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि लुङ्-लङ-लिटः इस सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति आती है। अन्यतरस्याम् की भी पूर्वसूत्र से अनुवृत्ति आ रही है। धातोः प्रत्ययः तथा परः का अधिकार आता है। तब छन्द विषय में लिङ अर्थ में धातु से लेट् प्रत्यय परे होता है ऐसी वाक्य योजना बनती है। लिङर्थ विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि को कहते हैं। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि में धातु से लेट् प्रत्यय होता है।

उदाहरण- जोषिषत्। तारिषत्।

सूत्रार्थ का समन्वय- जुष्-धातु से लिङर्थ में प्रकृतसूत्र से लेट् होकर प्रथमपुरुष एकवचन में तिप् आकर ''सिब्बहुलं लेटि'' सूत्र से सिप्प्रत्यय तथा अनुबन्धलोप होकर जुष् स् ति ऐसा होकर ''लेटोऽडाटौ'' से अडागम होकर ''आर्धधातुकस्येड्वलादेः'' इस सूत्र से इडागम तथा अनुबन्धलोप होकर जुष् इ स् अ ति होकर ''इतश्च लोपः परस्मैपदेषु'' सूत्र से तिप् के इकार का लोप होकर ''पुगन्तलघूपधस्य च'' सूत्र से उपधा को गुण होकर ''आदेशप्रत्यययोः'' इससे सकार को षत्व होकर जोषिषत् रूप बनता है।

तृ-धातु से लिङर्थ में प्रकृतसूत्र से लेट् तिप् सिप्प्रत्यय होकर अडागम तथा अनुबन्ध लोप होकर तृ स् अ ति होकर ''सार्वधातुकार्धधातुकयोः'' इस सूत्र से ऋकार को गुण अकार रपरत्व पूर्वक इडागम तथा अनुबन्धलोप होकर तर् इ स् अति इस स्थिति में ''व्यत्ययो बहुलम्'' इस सूत्र से तकार से उत्तर अकार को आकार होकर ''इतश्च लोपः परस्मैपदेषु'' से इकार का लोप होकर सकार को षत्व होकर तारिषत् रूप बनता है।

टिप्पणी

17.16 इतश्च लोपः परस्मैपदेषु॥ (3.4.17)

सूत्रार्थ– परस्मैपद विषय में लेट् लकार सम्बन्धी तिङ के इकार का भी विकल्प से लोप होता है।

सूत्रावतरणिका- परस्मैपद विषय में विकल्प से लेट् लकार सम्बन्धी तिङ के इकार के लोप के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से लेट् लकार सम्बन्धी इकार का परस्मैपद विषय में विकल्प से लोप होता है। इस सूत्र में चार पद हैं। इतः च लोपः परस्मैपदेषु यह सूत्रगत पदच्छेद है। इतः यह षष्ठ्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। लोपः यह प्रथमान्त पद है। परस्मैपदेषु यह सप्तम्यन्त पद है। लेटोऽडाटौ सूत्र से लेटः की अनुवृत्ति आ रही है। वा की वैतोऽन्यत्र इस पूर्वसूत्र से अनुवृत्ति आ रही है। तब लेट् सम्बन्धी इकार का विकल्प से लोप होता है परस्मैपद विषय में यह वाक्य योजना बनती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है लेट् लकार के तिङ के ह्रस्व-इकार का विकल्प से लोप होता है परस्मैपद विषय में।

उदाहरण में सूत्रार्थ का समन्वय- जोषिषत्-जुष्-धातु से लिङर्थ में प्रकृतसूत्र से लेट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में तिप् में ''सिब्बहुलं लेटि'' इस सूत्र से सिप्प्रत्यय होकर तथा अनुबन्धलोप होकर जुष् स् ति इस स्थिति में ''लेटोऽडाटौ'' इस सुत्र से अडागम ''आर्धधातुकस्येड्वलादेः'' सूत्र से इडागम तथा अनुबन्धलोप होकर जुष् इ स् अ ति होकर ''इतश्च लोपः परस्मैपदेषु'' इस सूत्र से तिप् के इकार का लोप होकर ''पुगन्तलघूपध स्य च'' इस सूत्र से उपधा को गुण होकर ''आदेशप्रत्यययोः'' से सकार को षत्व होकर जोषिषत् यह रूप बना।

17.17 लेटोऽडाटौ॥ (3.4.64)

सूत्रार्थ– लेट् लकार को अट् आट् का आगम पर्याय से होता है।

सूत्रावतरणिका- लेट्-लकार के अट् आट् आगम के विधान के लिए और उनके पित्त्व विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से लेट्-लकार के अट् आट् का आगम होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। लेटः अडाटौ यह सूत्रगत पदच्छेद है। लेटः यह षष्ठ्यन्त पद है। अडाटौ यह प्रथमान्त पद है। अट् च आट् च अडाटौ। आडुत्तमस्य पिच्च इस सूत्र से पित् की अनुवृत्ति आती है, और वह द्विवचनान्तता से विपरिणमित होता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है लेट् लकार को अट् आट् का आगम पर्याय से होता है वे पित् होते हैं।

टिप्पणी

उदाहरणम् - तारिषत्।

सूत्रार्थ का समन्वय- तृ-धातु से लेट् लकार होकर अनुबन्धलोप होकर तृ ल् इस स्थिति में लकार के स्थान पर तिप् तथा अनुबन्धलोप होकर तृ ति इस स्थिति में पूर्वोक्तसूत्र से अडागम होकर अनुबन्धलोप होकर तृ अ ति ऐसा होकर सिब्बहुलं लेटि से सिप्-प्रत्यय होकर तथा अनुबन्धलोप होकर तृ स् अ ति इस स्थिति में सिब्बहुलं णिद्वक्तव्यः इस वार्तिक से स को णिद्वद्भाव होकर उसके परे ऋकार को अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर तार् स् अ ति होकर इडागम तथा अनुबन्धलोप होकर तार इ स् अ ति होकर इतश्च लोपः परस्मैपदेषु से विकल्प से इकार के लोप के विधान से आदेशप्रत्यययोः से सकार को षकार होकर तारिषत् रूप सिद्ध होता है।

17.18 स उत्तमस्य॥ (3.4.68)

सूत्रार्थ– लेट् लकार सम्बन्धी उत्तम पुरुष के सकार का विकल्प से लोप होता है।

सूत्रावतरणिका– लेट् लकार के उत्तम पुरुष के सकार का विकल्प से लोप का विधान करने के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से लेट् लकार के उत्तम पुरुष के सकार का विकल्प से लोप होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। स यह प्रथमान्त पद है। उत्तमस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। इतश्च लोपः परस्मैपदेषु इस सूत्र से लोप की अनुवृत्ति आ रही है। लेटोऽडाटौ इस सूत्र से लेटः की अनुवृत्ति आती है। वा की भी वैतोऽन्यत्र इस पूर्वसूत्र से अनुवृत्ति आ रही है। सूत्रार्थ इस प्रकार है लेट् लकार के उत्तम पुरुष के सकार का विकल्प से लोप होता है।

उदाहरण- करवाव।

सूत्रार्थ का समन्वय- कृ-धातु से लेट् लकार का अनुबन्धलोप करने पर कृ ल् इस स्थिति में लकार के स्थान पर वस् होकर कृ वस् होकर तनादिकृञ्भ्य उः इससे उप्रत्यय होकर कृ उ वस् इस स्थिति में ऋकार को गुण होकर कर् उ होकर लेटोऽडाटौ से (पित्) आडागम होकर अनुबन्धलोप होकर कर् उ आ वस् अब उकार को गुण होकर तथा अवादेश होकर कर् अव् आ वस् होकर पूर्वोक्तसूत्र से विकल्प से सकार का लोप होने पर सभी वर्णों के सम्मेलन से करवाव यह रूप बनता है। सकार के लोप के अभावपक्ष में करवावः रूप बनता है।

17.19 आत ऐ॥ (3.4.95)

सूत्रार्थ– लेट् सम्बन्धी आकार को ऐकारदेश होता है।

सूत्रावतरणिका- लेट्-लकार के आकार को ऐकार का विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से लेट्-लकार के आकार को ऐकार आदेश होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। आत यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। ऐ यह लुप्तप्रथमान्त है। लेटोऽडाटौ इस सूत्र से लेट् की अनुवृत्ति आती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है लेट् लकार के आकार को ऐकार आदेश होता है।

उदाहरण- मादयैते।

सूत्रार्थ का समन्वय- मादि-धातु से लेट् होकर अनुबन्धलोप होकर मादि ल् इस स्थिति में लकार के स्थान पर आताम्-प्रत्यय होकर मादि आताम् होकर लेटोऽडाटौ से आडागम होकर अनुबन्धलोप होकर मादि आ आताम् होकर इकार को गुण एकार होकर अयादेश होकर माद् अय् आ आताम् इस स्थिति में पूर्वोक्तसूत्र से आताम् के आकार को ऐकार होकर मादय् आ ऐताम् इस स्थिति में टित आत्मनेपदानां टेरे से टी भाग को एत्व होकर मादय् आ ऐ त् ए अब आटश्च से वृद्धी एकादेश ऐकार होकर मादय् ऐ त् ए अब सभी वर्णों के सम्मेलन से मादयैते यह रूप बनता है।

17.20 सिब्बहुलं लेटि॥ (3.1.34)

सूत्रार्थ– लेट् लकार परे रहते धातु से सिप्-प्रत्यय बहुल करके होता है।

सूत्रावतरणिका– लेट् लकार परे रहते धातु से बहुल करके सिप्-प्रत्यय विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से लेट्-लकार परे रहते धातु से सिप्-प्रत्यय बहुल करके होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। सिप् बहुलं लेटि यह सूत्रगत पदच्छेद है। सिप् यह प्रथमान्त पद है। बहुलम् यह भी प्रथमान्त पद है। लेटि यह सप्तम्यन्त पद है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है लेट् लकार परे रहते धातु से सिप्-प्रत्यय बहुल करके होता है।

उदाहरण- जोषिषत्।

सूत्रार्थ का समन्वय- जुष्-धातु से लिङर्थ में प्रकृतसूत्र से लेट् परे रहते प्रथमपुरुष एकवचन में तिप् होकर ''सिब्बहुलं लेटि'' इस प्रकृतसूत्र से सिप्प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप होकर जुष् स् ति इस स्थिति में ''लेटोऽडाटौ'' इस सुत्र से अडागम होकर ''आर्धधातुकस्येड्वलादेः'' इस्व सूत्र से इडागम होकर तथा अनुबन्धलोप होकर जुष् इ स् अ ति इस स्थिति में ''इतश्च लोपः परस्मैपदेषु'' इस सूत्र से तिप् के इकार का लोप होकर ''पुगन्तलघूपध स्य च'' इस सूत्र से उपधा को गुण ओकार होकर ''आदेशप्रत्यययोः'' इससे सकार के स्थान पर षत्व होकर जोषिषत् यह रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न-17.2

60. अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च का क्या अर्थ है?

61. विजुपे च्छन्दसि इस सूत्र का पदच्छेद कीजिए?

62. विजुपे च्छन्दसि इस सूत्र से किस धातु से कौन सा प्रत्यय होता है?

63. उपयज्-इस शब्दस्वरूप का प्रातिपदिकसंज्ञा विधायक सूत्र क्या है?

64. आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च इस सूत्र में चकार के ग्रहण से क्या सिद्ध होता है?

65. हन् को बहुल करके क्विप् किस सूत्र से होता है?

66. गत्यर्थक धातुओं को छन्द विषय में युच् किस सूत्र से होता है?

67. गत्यर्थक जो अन्य धातुएँ हैं उनको भी छन्द विषय में युच् किस सूत्र से होता है?

68. विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि धातुओं से लेट् किस सूत्र से होता है?

69. इतश्च लोपः परस्मैपदेषु का क्या अर्थ है?

70. लेट् से अट् आट् ये आगम किस सूत्र से होते हैं?

71. स उत्तमस्य इस सूत्र से क्या होता है?

72. सुदामा का क्या अर्थ है?

73. आत ऐ इस सूत्र से क्या होता है?

74. छन्द विषय में विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि धातुओं से लेट् किस सूत्र से होता है?

75. अन्येभ्योऽपि दृश्यते का क्या अर्थ है?

76. लिङर्थ क्या होता है?

77. मातरं हतवान् इस अर्थ में क्या रूप बनता है?

पाठ का सार

इस पाठ में इन्, ण्वि, ज्युट्, विट्, विच्, क्विप् इत्यादि कुछ प्रत्ययों का ससूत्र प्रयोग प्रदर्शित है। और वहां कुछ वैदिकशब्दों के लौकिकरूप भी प्रदर्शित हैं। तथापि पाठ के विस्तृत होने के भय से सभी रूपों को ससूत्र प्रदर्शित नहीं किया गया। और उनको

स्वयं जानना चाहिए। कुछ निपातन सिद्ध शब्दों की भी आलोचना की गयी है। और अन्त में लेट्लकार से सम्बन्धित भी चर्चा की गयी।

पाठान्त प्रश्न

77. छन्दसि गत्यर्थेभ्य: इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

78. अन्येभ्योऽपि दृश्यते इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

79. बहुलं छन्दसि इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

80. हव्येऽनन्त:पादम् इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

81. छन्दसि सह: इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

82. उपयट् तथा सुदामा इन दो रूपों को ससूत्र सिद्ध कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1

51. सिद्धप्रक्रिया का निर्देश ही निपात है।

52. याचन।

53. पृतनाषाट्।

54. झलां जशोऽन्ते।

55. छन्द विषय में वन्-सन्-रक्ष्- और मथ्-धातुओं से कर्म उपपद रहते इन्-प्रत्यय होता है।

56. हव्येऽनन्त:पादम्।

57. मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन्।

58. छन्द विषय में सुप् उपपद रहते वह धातु से ण्वि प्रत्यय होता है।

17.2

59. सम्बुद्धि में कृतदीर्घ अवया श्वेतवा पुरोडा उक्थशा इन शब्दों का निपात किया जाता है।

60. विच् उपे छन्दसि यह सूत्रगत पदच्छेद है।

61. यन्धातु से विच्प्रत्यय विजुपे च्छन्दसि इस सूत्र से होता है।

62. कृत्तद्धितसमासाश्च यहाँ प्रातिपदिकसंज्ञा विधायक सूत्र है।

63. विच्प्रत्यय से सिद्ध होता है।

64. बहुलं च्छन्दसि से।

65. च्छन्दसि गत्यर्थेभ्यः से।

66. अन्येभ्योऽपि दृश्यते इस सूत्र से।

67. लिङर्थे लेट् इस सूत्र से।

68. लेट् सम्बन्धी तिङ के इकार का लोप विकल्प से परस्मैपद में।

69. लेटोऽडाटौ इस सूत्र से।

70. लेट् लकार के उत्तम पुरुष के सकार का विकल्प से लोप होता है।

71. शोभनं ददाति यह अर्थ है।

72. लेट् लकार के आकार को ऐकार होता है।

73. लिङर्थे लेट्।

74. गत्यर्थक जो अन्य धातुएँ उनसे छन्द विषय में युच् प्रत्यय होता है।

75. हेतुहेतुमद्भावादि तथा विध्यादि।

76. मातृहा।

सत्रहवां पाठ समाप्त